

शिक्षा एवं अवसर

बंदूक नहीं, किताब

“हर बच्चे के हाथ में किताब, हर गाँव में शिक्षा का अधिकार।”

वर्षों की हिंसा और असुरक्षा ने अनेक बच्चों की पढ़ाई प्रभावित की। अब स्कूलों में नियमित शिक्षा और सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित करना हमारी साझा प्राथमिकता है।

तब · नक्सल हिंसा का दौर

स्कूल भवन तोड़े गए, कई बच्चों की पढ़ाई छूट गई।

अब · शांति का नया दौर

बंद स्कूल फिर खुल रहे हैं, बच्चे रोज़ कक्षा में।

नियमित स्कूल

सुरक्षित रास्ता



लोकतंत्र एवं भागीदारी

बस्तर का भविष्य, बस्तर के लोगों के हाथ

“फैसले गाँव के, भागीदारी सबकी।”

ग्रामसभा, पंचायत और लोकतांत्रिक संस्थाएँ स्थानीय आवश्यकताओं और विकास की प्राथमिकताओं को सामने लाने का माध्यम हैं। हर नागरिक को अपनी बात रखने और सवाल पूछने का अधिकार है।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
जन-अदालत और धमकियों के डर से ग्रामसभा में बोलना मुश्किल था।

अब · शांति का नया दौर
ग्रामसभा और पंचायत में लोग खुलकर अपनी बात रख रहे हैं।

ग्रामसभा | पंचायत | हर आवाज़



संपर्क एवं विकास

रास्ते खुलें, अवसर बढ़ें

“सड़क से अस्पताल, स्कूल और बाज़ार तक पहुँच।”

सुरक्षित सड़कें केवल यात्रा का साधन नहीं, बल्कि इलाज, शिक्षा, व्यापार और आपातकालीन सेवाओं तक पहुँच का आधार हैं। एम्बुलेंस, स्कूल वाहन और बाज़ार — सब अब गाँव के और पास।

तब · नक्सल हिंसा का दौर

सड़कें काटी गईं, बारूदी सुरंगें बिछीं, गाँव कटे रहे।

अब · शांति का नया दौर

पक्की सड़कें और पुल गाँवों को अस्पताल व बाज़ार से जोड़ रहे हैं।

अस्पताल | **स्कूल** | **बाज़ार**



अधिकार एवं आजीविका

जल, जंगल, ज़मीन और अधिकार

“वन परंपराओं का सम्मान, अधिकारों की जानकारी, आजीविका के नए अवसर।”

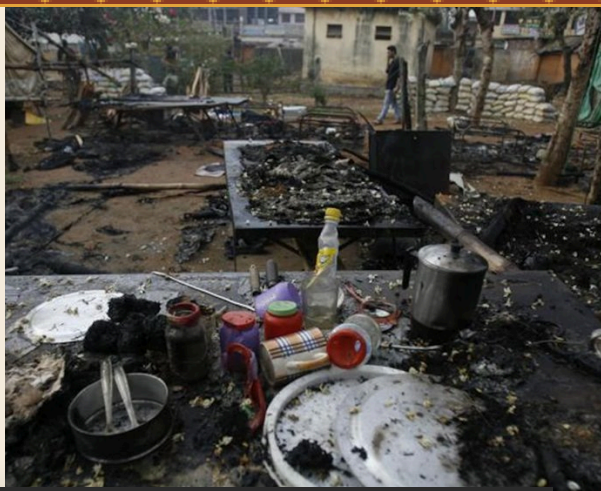
वनाधिकार, लघु वनोपज, उचित मूल्य, सामुदायिक संसाधन और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अधिकारों की जानकारी प्रत्येक पात्र परिवार तक पहुँचे।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
वनोपज औने-पौने दाम पर बिकी, जबरन वसूली होती रही।

अब · शांति का नया दौर
समर्थन मूल्य, वनाधिकार पट्टे और योजनाओं का लाभ गाँव तक।

- वनाधिकार
- लघु वनोपज
- उचित मूल्य





मानवीय पीड़ा

हिंसा की कीमत कौन चुकाता है ?

“हर घायल व्यक्ति, हर उजड़ा परिवार — एक मानवीय पीड़ा ।”

बारूदी सुरंगों, विस्फोटों और सशस्त्र संघर्ष की हिंसा ने नागरिकों और सुरक्षाकर्मियों के परिवारों को प्रभावित किया है । पीड़ितों के उपचार, पुनर्वास और सम्मानजनक जीवन को प्राथमिकता मिले ।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
आईईडी, गोलीबारी और जन-अदालतों में निर्दोषों की जान गई ।

अब · शांति का नया दौर
भयमुक्त माहौल, पीड़ितों को उपचार और पुनर्वास ।

- उपचार
- पुनर्वास
- सम्मानजनक जीवन



पुनर्वास एवं सम्मान

नई शुरुआत, सम्मान के साथ

“हिंसा छोड़ने वालों के लिए पुनर्वास, प्रशिक्षण और आजीविका के अवसर।”

आत्मसमर्पण कर चुके पात्र व्यक्तियों को पुनर्वास नीति के अनुसार सहायता, कौशल प्रशिक्षण और समाज में पुनः जुड़ने के अवसर उपलब्ध हैं।

जानकारी हेतु: जिला पुनर्वास समिति / नजदीकी थाना

तब · नक्सल हिंसा का दौर
जंगल का कठिन जीवन, परिवार से दूरी और हर दिन डर।

अब · शांति का नया दौर
आत्मसमर्पण, पुनर्वास और परिवार के साथ सम्मान का जीवन।

- **पुनर्वास सहायता**
- **कौशल प्रशिक्षण**
- **आजीविका**



संस्कृति एवं पहचान

हमारी भाषा, हमारी कला, हमारी परंपरा

“बस्तर की पहचान — हमारी संस्कृति।”

बस्तर की बोलियाँ, लोककला, नृत्य और परंपराएँ हमारी साझा धरोहर हैं। सांस्कृतिक संरक्षण हो और स्थानीय कलाकारों को आगे बढ़ने के अवसर मिलें।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
मेले-मड़ई, उत्सव और देव-स्थलों पर भी भय का साया।

अब · शांति का नया दौर
मड़ई, पंडुम और लोकनृत्य फिर पूरे उत्साह से।

- **हमारी बोली**
- **लोककला**
- **नृत्य-संगीत**



युवा एवं भविष्य

युवा आगे बढ़ें

“खेल, कौशल, शिक्षा और रोज़गार से — बंदूक से नहीं।”

खेल प्रतियोगिताएँ, कौशल प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा और रोज़गार के अवसर युवाओं को सुरक्षित और सम्मानजनक भविष्य की ओर ले जाते हैं। बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजनों में गाँव-गाँव के युवा अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं — हर युवा की प्रतिभा को सही दिशा मिले।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
युवाओं को जबरन संगठन में भर्ती कर बंदूक थमाई गई।

अब · शांति का नया दौर
बस्तर ओलंपिक, खेल मैदान, कौशल प्रशिक्षण और रोज़गार।

खेल | **कौशल** | **रोज़गार**



महिला सशक्तिकरण

महिलाओं की भागीदारी

“हर महिला की आवाज़ महत्वपूर्ण है।”

शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक आत्मनिर्भरता — हर महिला को निर्णयों में भागीदारी और आगे बढ़ने का समान अवसर मिले।

महिला हेल्पलाइन 181 · आपात सहायता 112

तब · नक्सल हिंसा का दौर
महिलाएँ हिंसा, शोषण और भय के बीच जीती रहीं।

अब · शांति का नया दौर
स्व-सहायता समूह, आजीविका और ग्रामसभा में बराबर आवाज़।

शिक्षा | **सुरक्षा** | **आत्मनिर्भरता**





लोकतांत्रिक अधिकार

असहमति का अधिकार है, हिंसा का नहीं

“बात रखिए, सवाल पूछिए — हथियार नहीं उठाइए।”

लोकतंत्र में असहमति व्यक्त करना हर नागरिक का अधिकार है। शिकायतों का समाधान ग्रामसभा, प्रशासन, शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति और न्यायालय जैसे कानूनी उपायों से संभव है।

तब · नक्सल हिंसा का दौर
असहमति पर धमकी, जन-अदालत और सज़ा।

अब · शांति का नया दौर
जनसुनवाई, शिकायत और न्यायालय — कानून का रास्ता।

ग्रामसभा | प्रशासन | न्यायालय



जन-सुरक्षा

बारूदी सुरंग और संदिग्ध विस्फोटक से सावधान

“न छुएँ • दूर रहें • पुलिस को सूचना दें”

1. **किसी संदिग्ध वस्तु को न छुएँ, न उठाएँ, न खोलें।**
2. **सुरक्षित दूरी बनाएँ, दूसरों को भी दूर रखें।**
3. **सुरक्षित स्थान से तुरंत पुलिस को सूचना दें।**

तब · नक्सल हिंसा का दौर
पगडंडियों और सड़कों पर बिछी बारूदी सुरंगें।

अब · शांति का नया दौर
सुरक्षा बल क्षेत्र को लगातार सुरक्षित कर रहे हैं — सतर्कता अब भी ज़रूरी।

बच्चों को समझाएँ — अनजान तार या धातु की वस्तु खिलौना नहीं है।



सेवा एवं विश्वास

शहीद वीर गुंडाधुर सेवा डेरा

“अब सेवाएँ पहुँचेंगी गाँव के पास।”

- योजनाओं की जानकारी व आवेदन
- बैंकिंग व दस्तावेज़ सहायता
- आजीविका व स्व-सहायता समूह
- स्वास्थ्य सेवाएँ व शिविर
- शिक्षा व कौशल मार्गदर्शन
- शिकायत पंजीकरण

तब · नक्सल हिंसा का दौर
योजनाओं और दस्तावेज़ों के लिए दूर मुख्यालय जाना पड़ता था।

अब · शांति का नया दौर
सेवा डेरा के माध्यम से सेवाएँ गाँव के पास।